ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष-18 | अंक- 17 | दिसम्बर-I | (पाक्षिक) | माउण्ट आबू | Rs. 8.00

विश्व शान्ति भवन बनेगा विश्व में शांति का वाहक - राम नाईक

★ राज्यपाल ने किया विश्व शांति भवन का उद्घाटन ★ कालीन नगर को मिला एक अनमोल तोहफा ★ शांति की शक्ति से भारत बनेगा विश्व गुरू

राज्यपाल महोदय राम नाईक के साथ ब्र.कु. विजयालक्ष्मी, ब्र.कु. शिवानी, ब्र.कु. बृजमोहन, क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु. सुरेन्द्र दीदी दीप प्रज्वलित करते हुए।

सभी को राजयोग की शिक्षा देने हेतु नवनिर्मित 'विश्व शांति भवन' में मेडिटेशन हॉल, सेमिनार हॉल तथा राजयोग प्रशिक्षण कक्ष बनाये गए हैं।

नवनिर्मित 'विश्व शांति भवन' के शिलापट्ट का अनावरण करते हुए राज्यपाल महोदय राम नाईक दिखाई दे रहे हैं।

भदोही-उ.प्र.। राज्यपाल महोदय राम नाईक ने कहा कि जीवन में जो भी करो, वो अच्छे व सकारात्मक सोच से प्रेरित हो। बेहतर करने में ही जीवन की सार्थकता सिद्ध हो सकती है। शांति का वातावरण तैयार करने में ब्रह्माकुमारी संस्थान का महत्वपूर्ण स्थान है। इस संस्था का जन्म भले ही भारत में हुआ है, लेकिन इसका प्रकाश पूरे विश्व में फैल रहा है। उन्होंने यह विचार नव निर्मित 'विश्व शांति भवन' के लोकार्पण कार्यक्रम में व्यक्त किये।

उन्होंने इस संस्था को शांति के लिए प्रेरणादायक बताते हुए कहा कि सुख शांति के लिए चरित्रवान होना आवश्यक है। हम चरित्रवान होंगे, तभी दूसरों का चरित्र निर्माण कर सकेंगे। ब्रह्माकुमारीज़ के माध्यम से पूरे विश्व को शांति का संदेश दिया जा रहा है, जो बहुत ही सराहनीय कार्य है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह विश्व शांति भवन, विश्व में शांति का वाहक बनेगा। साथ ही उन्होंने महिला सशक्तिकरण की चर्चा करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ की बहनों की खुलकर तारीफ की और उनके कार्य को प्रेरणादायी बताया।

खुश रहने के लिए दुआएं कमाएं

ब्रह्माकुमारीज़ की अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त वक्ता एवं जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी ने लोगों को खुश रहने का मंत्र

देते हुए कहा कि खुश रहने के लिए सात्विक भोजन करना चाहिए, क्योंकि जैसा अन्न होता है, वैसा ही हम ग्रहण करते हैं, और वैसा ही हमारा तन मन बनता है। सामाजिक ताना-बाना कमज़ोर न हो इसके लिए दुआएं कमाएं। उन्होंने सत्कर्म के साथ धन कमाने की ज़रूरत बताते हुए कहा कि किसी को दु:ख देकर कमाए गए धन से लक्ष्मी की कृपा हासिल नहीं होती है।

उन्होंने आगे कहा कि जीवन को खुशी के साथ जीने के लिए हम जीवन से जुड़े जो भी निर्णय लेते हैं, उसे खुद व परिवार की खुशी को ध्यान में रखकर लें। अक्सर हम कोई भी कार्य करने से पहले उसके परिणाम को यही सोच कर नहीं करते कि लोग क्या कहेंगे!

यहाँ प्रवेश मात्र से होती है सुख शांति की अनुभूति

नव निर्मित 'विश्व शांति भवन' एक ऐसा दिव्य व मनोरम स्थल बन चुका है, जहाँ प्रवेश मात्र से ही असीम शांति व सुख की गहन अनुभूति होती है। इस भवन में मेडिटेशन हॉल, सेमिनार हॉल तथा राजयोग प्रशिक्षण कक्ष का निर्माण किया गया है, जहाँ बिना किसी भेदभाव के सभी वर्गों को आध्यात्मिक, नैतिक एवं मानवीय मूल्यों की शिक्षा दी जाएगी तथा विभिन्न आध्यात्मिक तथा जनजागृति के कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे।

इस अवसर पर राजयोगिनी ब्र.कु. सुरेन्द्र दीदी, संस्थान के अति. सचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विजयालक्ष्मी समेत हज़ारों ब्र.कु. भाई बहनें तथा बड़ी संख्या में कालीन निर्यातक व बुनकर मौजूद थे।

कालीन के साथ अब 'शांति' होगी भदोही की पहचान

कलयुग से सतयुग बनाने के लिए हमें विश्व में शांति लानी होगी। यह तभी संभव हो पायेगा जब हम संकल्प लें, 'मैं आत्मा विश्व में शांति लाने के लिए गुस्सा का त्याग करूंगा या करूंगी।' मन में घर कर गए इस धारणा को त्यागना होगा कि लोग मेरे अनुसार होंगे। हमें काम करना है और करवाना भी है, लेकिन अशांति से नहीं। इसके लिए हमें ज़ोर से बोलकर नहीं, डांटकर नहीं, तनाव में रहकर नहीं, परेशान होकर नहीं, शांत होकर काम करवाना होगा। जब हम एक-एक बात शांति के साथ करेंगे और करवायेंगे तो विश्व में शांति ला सकते हैं ।

चरित्र निर्माण से ही बनेगा स्वस्थ समाज : देवव्रत

सुन्नी-शिमला। अध्यात्म की शक्ति चरित्र निर्माण के साथ-साथ व्यक्तित्व को ऊँचा कर देती है। चरित्र निर्माण से ही स्वस्थ समाज का निर्माण होता है। उक्त विचार ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 'चरित्र निर्माण आध्यात्मिक सम्मेलन' में मुख्यातिथि राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के माध्यम से प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को आध्यात्मिकता का ज्ञान देकर चरित्र निर्माण का जो कार्य किया जा रहा है, वह सराहनीय है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति कोई भी कार्य सुख प्राप्ति के लिए करता है, इसके लिए वह प्रयासरत रहता है, संघर्ष करता है। समाज में धर्म भी तेज़ी से बढ़ा है, लेकिन पाप की संस्कृति कम नहीं हुई है, जिस पर चिंतन होना चाहिए। इसका कारण है कि हर व्यक्ति दोहरे चरित्र का जीवन जी रहा है।

उन्होंने कहा कि हमारी संस्कृति में सार्वजनिक और निजी जीवन में भेद नहीं किया है। 'जो मन में है, वह वाणी में होना चाहिए और जो वाणी में है, वह कर्म में दिखना चाहिए।' मन, वचन और कर्म एक होने पर ही समाज में परिवर्तन आता है। आचार्य देवव्रत ने व्यक्ति के चरित्र निर्माण पर बल देते हुए कहा कि आचरण की शुद्धता को बनाए रखने का कार्य किया जाना चाहिए। उन्होंने लोगों से देवभूमि के उच्च आचरण को जीवन में अपनाने का आग्रह किया। नशामुक्ति के खिलाफ अभियान चलाया जाना चाहिए। कन्या भ्रूण हत्या के खिलाफ जागृति आनी चाहिए तथा जल संरक्षण, जैविक कृषि एवं गोपालन व समरसता जैसे सामाजिक अभियानों में हर व्यक्ति को योगदान देना चाहिए। इससे पूर्व राज्यपाल ने ओम शांति भवन का उद्घाटन किया। इस अवसर पर अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय माउण्ट आबू की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. ऊषा ने चरित्र निर्माण को लेकर संस्थान की गतिविधियों की जानकारी दी। संस्थान के उत्तर भारत के निदेशक ब्र.कु. अमीर चंद ने राज्यपाल का स्वागत किया। माउण्ट आबू के ब्र.कु. प्रकाश ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। इस अवसर पर लेडी गवर्नर दर्शना देवी तथा शहर के गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम में बायें से ब्र.कु. प्रकाश, ब्र.कु. अमीरचंद, दीप प्रज्वलित करते हुए राज्यपाल देवव्रत आचार्य, श्रीमति आचार्य तथा राजयोगिनी ब्र.कु. ऊषा।